



**studyiq**



**studyiq.education**



**Study IQ Education**



**@studyiq**



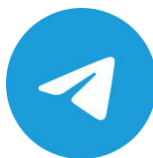
**Study IQ Education**



<https://www.instagram.com/shubhamsardhalia>



<https://www.facebook.com/shubham.sardhalia/>



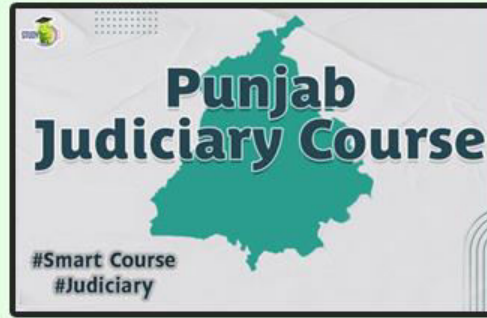
<https://t.me/sardhaliasir>

# **26 December Marked as** **“Veer Baal Diwas”**

**26 दिसंबर को "वीर बाल दिवस" के**  
**रूप में चिह्नित किया गया**

# Punjab State Exams

— Smart Course —



Hon'ble Prime Minister has announced to observe 'Veer Bal Diwas' every year on martyrdom day of Sahibzadas.

माननीय प्रधान मंत्री ने साहिबजादों के शहादत दिवस पर हर साल 'वीर बाल दिवस' मनाने की घोषणा की है।

The announcement was made on the auspicious occasion of the Parkash Parv of Sri Guru Gobind Singh Ji which is being observed this year on January 9, 2022.

यह घोषणा श्री गुरु गोबिंद सिंह जी के प्रकाश पर्व के शुभ अवसर पर की गई थी, जो इस वर्ष 9 जनवरी, 2022 को मनाया जा रहा है।



Narendra Modi   
@narendramodi



Today, on the auspicious occasion of the Parkash Purab of Sri Guru Gobind Singh Ji, I am honoured to share that starting this year, 26th December shall be marked as 'Veer Baal Diwas.' This is a fitting tribute to the courage of the Sahibzades and their quest for justice.

11:59 AM · Jan 9, 2022 · Twitter for iPhone

10K Retweets 745 Quote Tweets 44.8K Likes



Guru Gobind Singh Ji was born on December 22, 1666.

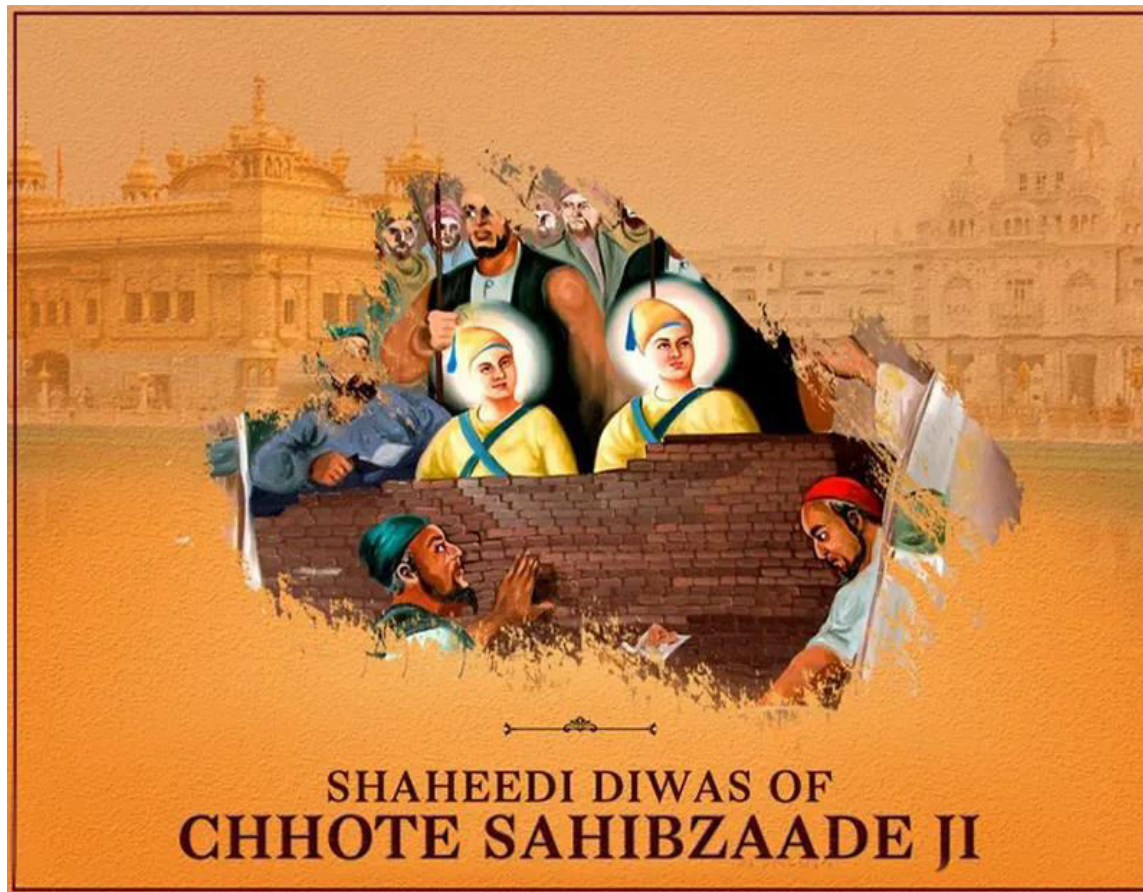
His birth anniversary, also known as Prakash Parv, is observed every year according to Nanakshahi calendar between the months of December and January.

गुरु गोबिंद सिंह जी का जन्म 22 दिसंबर 1666 को हुआ था।  
उनकी जयंती, जिसे प्रकाश पर्व के नाम से भी जाना जाता है,  
हर साल दिसंबर और जनवरी के महीनों के बीच नानकशाही  
कैलेंडर के अनुसार मनाई जाती है।



**Shaheedi Chote Sahibzade**  
**Saka Sirhind**

**शहीदी छोटे साहिबजादे**  
**साका सरहिन्द**



SHAHEEDI DIWAS OF  
CHHOTE SAHIBZAADE JI

Chhotte Sahibzade attained martyrdom on 26 December 1704 at a very young age of 9 & 6 only.

This is known as Saka Sirhind.

छोटे साहिबजादों ने 26 दिसंबर 1704 को महज 9 और 6 साल की छोटी उम्र में ही शहादत हासिल कर ली थी।

इसे साका सरहिंद के नाम से जाना जाता है।

The brave and fearless Tenth Guru of Sikhs  
Sri Guru Gobind Singh Ji was living with  
Sikhs and Sahibzadas at the Fort of Sri  
Anandpur Sahib.

सिखों के बहादुर और निडर दसवें गुरु श्री गुरु  
गोबिंद सिंह जी श्री आनंदपुर साहिब के किले  
में सिखों और साहिबजादों के साथ रह रहे थे।

Mughal forces on the order of Aurangzeb and Pahari Raaje's Army jointly attacked Anandpur Sahib.

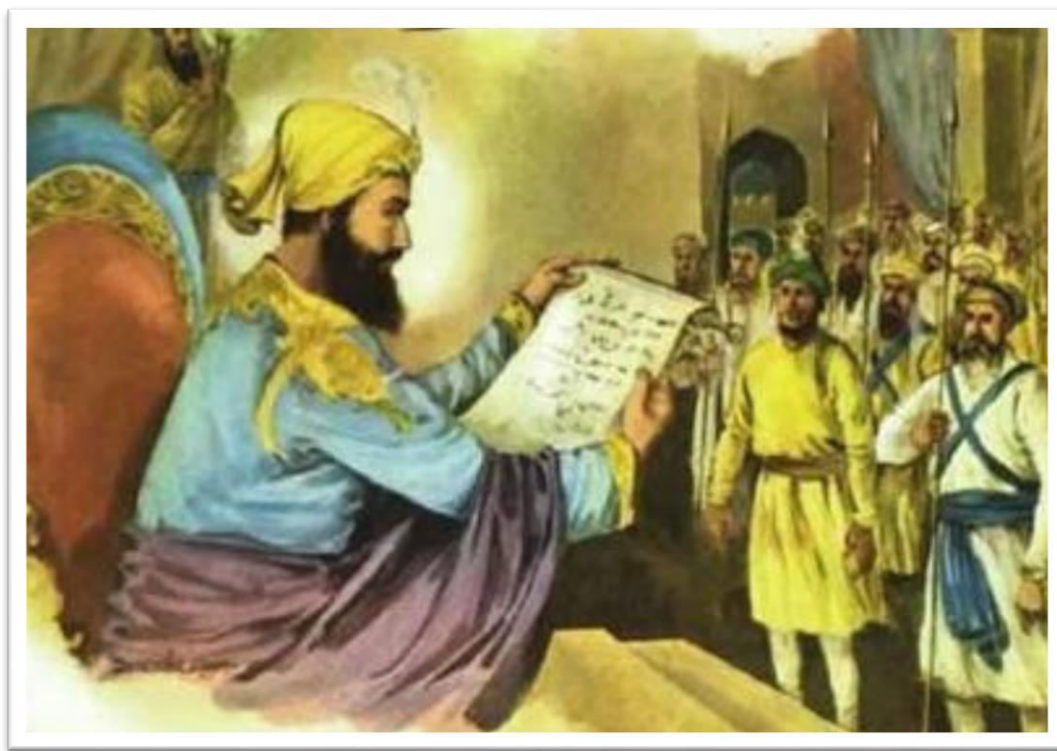
They surrounded the fort of Anandpur Sahib, and asked Guru Sahib to leave the fort.

औरंगजेब के आदेश पर मुगल सेना और पहाड़ी राजे की सेना ने संयुक्त रूप से आनंदपुर साहिब पर हमला किया।

उन्होंने आनंदपुर साहिब के किले को घेर लिया और गुरु साहिब को किला छोड़ने के लिए कहा।

Mughal Emperor Aurungzeb and Pahari Raaje sent a message on Oath that if the Guru and his Sikhs left the fort they would be allowed to go wherever they wish.

मुगल बादशाह औरंगजेब और पहाड़ी राजे ने शपथ पर एक संदेश भेजा कि अगर गुरु और उनके सिखों ने किला छोड़ दिया तो उन्हें जहां चाहें वहां जाने दिया जाएगा।



Guru Gobind Singh Ji had his doubts, but on being persuaded by his devoted Sikhs, he reluctantly agreed to leave the fort.

However it happened exactly as the Guru had apprehended.

गुरु गोबिंद सिंह जी को शंका थी, लेकिन अपने समर्पित सिखों के समझाने पर, वे अनिच्छा से किले को छोड़ने के लिए तैयार हो गए।

हालाँकि यह ठीक वैसा ही हुआ जैसा गुरु जी ने सोचा था।





As soon as Sikhs came out of the fort the Mughal Army pounced upon them.

A fierce battle was fought on the banks of Sirsa River.

जैसे ही सिख किले से बाहर निकले मुगल सेना ने उन पर धावा बोल दिया।

सिरसा नदी के तट पर भीषण युद्ध हुआ।

In the dust and din of battle, members of the family of Guru Gobind Singh Ji got separated from each other at river Sirsa.

Gurdwara Parivar Vichora Sahib is situated at this place in the memory of separation of the Family.

लड़ाई की धूल और शोर में  
सिरसा नदी के किनारे गुरु गोबिंद सिंह जी के  
परिवार के सदस्य एक दूसरे से बिछड़ गए।

परिवार के अलग होने की याद में इस स्थान पर  
गुरुद्वारा परिवार विछोरा साहिब स्थित है।

**PARIVAR VICHORA:  
THE SPOT OF  
BATTLE AND  
SEPARATION**



The two younger sons Sahibzada Zorawar Singh (9) and Sahibzada Fateh Singh (6) proceeded along with Guruji's revered old mother Mata Gujri Ji.

दो छोटे बेटे साहिबजादा जोरावर सिंह (9) और साहिबजादा फतेह सिंह (6) अपनी दादी और गुरुजी की पूजनीय मां माता गुजरी जी के साथ आगे बढ़े।

The two elder brothers, Sahibzada Ajit Singh Ji (18) and Sahibzada Jujhar Singh Ji (14), accompanied their father Guru Gobind Singh Ji.

दोनों बड़े भाई साहिबजादा अजीत सिंह जी (18) और साहिबजादा जुझार सिंह जी (14) अपने पिता गुरु गोबिंद सिंह जी के साथ थे।

After Crossing Sirsa River, they stayed for the night at Roper and reached the Chamkaur di Garhi, Where the fierce battle of Chamkaur was fought.

सिरसा नदी को पार करने के बाद, वे रोपर में रात रुके और चमकौर दी गढ़ी पहुंचे, जहां चमकौर की भीषण लड़ाई लड़ी गई थी।

The Battle of Chamkaur Sahib, was fought between the Khalsa forces, led by Guru Gobind Singh, and the forces of the Mughals led by Wazir Khan (Nawab of Sirhind).

चमकौर साहिब की लड़ाई, गुरु गोबिंद सिंह के नेतृत्व वाली खालसा सेनाओं और वज़ीर खान (सरहिंद के नवाब) के नेतृत्व में मुगलों की सेनाओं के बीच लड़ी गई थी।





In the battle of Chamkaur, both the elder sons of Guru Gobind Singh Sahibzada Ajit Singh and Sahibzada Jujhar Singh were martyred in combat.

चमकौर की लड़ाई में, गुरु गोबिंद सिंह साहिबजादा अजीत सिंह और साहिबजादा जुझार सिंह के दोनों बड़े बेटे युद्ध में शहीद हो गए थे।

Ganga Ram Kaul, a former cook of Guru Ghar requested Mata Gujri Ji to go with him to his village Kherhi.

गुरु घर के पूर्व रसोइया गंगा राम कौल माता गुजरी जी से उनके साथ अपने गांव खेड़ी जाने का अनुरोध किया।



He assured her that their whereabouts will not be known to the Emperor's officials and they would be quite safe here.

उन्होंने माता गुजरी को आश्वासन दिया कि उनके ठिकाने के बारे में सम्राट के अधिकारियों को पता नहीं चलेगा और वे यहां काफी सुरक्षित रहेंगे।

At night Ganga Ram stole the Gold Coins from the bag of Mata Gujri.

With the intention to keep the coins he informed the Police of Wazir Khan that Mata Gujri and Sons of Guru Ji were at his house.

रात में गंगा राम ने माता गुजरी के थैले से सोने के सिक्के चुरा लिए।

सिक्कों को रखने के इरादे से उसने वजीर खान की पुलिस को सूचित किया कि माता गुजरी और गुरु जी के पुत्र उनके घर पर थे।





Sahibzade and Mata Ji were arrested and taken to Thanda Burj, Sirhind.

Thanda Burj(Cold Tower) was a high place with no walls to shed the chilling breeze of December Month.

साहिबजादे और माता जी को गिरफ्तार कर सरहिंद के ठंडा बुर्ज ले जाया गया।

ठंडा बुर्ज (कोल्ड टॉवर) दिसंबर महीने की ठंडी हवा को बहा देने के लिए बिना दीवारों वाला एक ऊंचा स्थान था।



Next Day Two Sahibzade were taken to the court of Nawab Wazir Khan.

Wazir Khan asked both of them to accept Islam, But they remained firm and said they will never leave sikhi.

अगले दिन दो साहिबजादों को नवाब वजीर खान के दरबार में ले जाया गया।

वजीर खान ने उन दोनों को इस्लाम कबूल करने को कहा, लेकिन वे अड़े रहे और कहा कि वे कभी भी सिखी नहीं छोड़ेंगे।



Nawab Wazir Khan ordered to brick both of them alive in the town of Sirhind.

Both Sahibzadas started reciting Jap Ji Sahib while the wall was going up brick by brick.

नवाब वजीर खान ने सरहिंद शहर में उन दोनों को जिंदा ईंट लगाने का आदेश दिया।

दोनों साहिबजादों ने जप जी साहिब का पाठ करना शुरू कर दिया, जबकि दीवार ईंट-से-ईंट ऊपर जा रही थी।

The wall was raised till their shoulders and then they were beheaded and martyred.

As soon as the two Sahibzadas attained martyrdom, Mata Gujri Ji breathed her last.

On 26 December 1704 all three attained martyrdom.

उनके कंधों तक दीवार खड़ी कर दी गई और फिर उनका सिर काटकर शहीद कर दिया गया।

जैसे ही दोनों साहिबजादों ने शहादत प्राप्त की, माता गुजरी जी ने अंतिम सांस ली।

26 दिसंबर 1704 को तीनों ने शहादत प्राप्त की।

The same evening Dewan Todar Mal, a devoted Sikh, a jeweller reached Nawab Wazir Khan's court for permission to cremate the dead bodies of the two Sahibzadas and Mata Guiri Ji.

उसी शाम दीवान टोडर मल, एक समर्पित सिख, एक जौहरी, नवाब वज़ीर खान के दरबार में दो साहिबजादों और माता गुरी जी के शवों का अंतिम संस्कार करने की अनुमति के लिए पहुंचे।

The Nawab agreed on condition that the Dewan would pay for the required piece of land by spreading as many Gold coins as would cover the entire spot.

नवाब ने इस शर्त पर सहमति व्यक्त की कि दीवान जमीन के आवश्यक टुकड़े के लिए उतने सोने के सिक्के फैलाकर भुगतान करेगा जितना कि पूरे स्थान को कवर करेगा।

The two martyred young sons of Guru Gobind Singh Ji were cremated with full honours along with their grandmother.

Gurdwara Jyoti Saroop Sahib is situated at place where Sahibzadas were cremated.

गुरु गोबिंद सिंह जी के दो शहीद युवा पुत्रों का उनकी दादी के साथ पूरे सम्मान के साथ अंतिम संस्कार किया गया।

गुरुद्वारा ज्योति सरूप साहिब उस स्थान पर स्थित है जहां साहिबजादों का अंतिम संस्कार किया गया था।

**ਦੁਨੀਆਂ ਦੀ ਸਭ ਤੋਂ ਮਹਿੰਗੀ ਧਰਤੀ, ਜਾਣੋ ਕਿਉਂ?**





There is nothing parallel to the martyrdom of Young boys in the human history.

The day shall be celebrated as “Veer Baal Diwas.”

मानव इतिहास में युवा लड़कों की शहादत के समानांतर कुछ भी नहीं है।

इस दिन को "वीर बाल दिवस" के रूप में मनाया जाएगा।

# Punjab State Exams

— Smart Course —

